चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	20-6-24	7	1-2

THE TIMES OF INDIA

To subscribe call 1800 1200 004 or visit subscribe.timesgroup.com

Viruses group found in Hry rice nursery

Kumar Mukesh | TNN

Hisar: Vice-chancellor, Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University (HAU), Prof B R Kamboj has said spinareoviridae virus group was being observed in rice nurseries at many places in Haryana. Affected plants are dwarfed or more green than normal, said the VC. "University scientists have decoded the viruses present in the nurseries in Haryana. Infection on a smaller scale and timely steps taken can avoid crop losses. Laboratory analysis of samples collected from different locations of Haryana has revealed the presence of dwarfing viruses. A team of experts is regularly monitoring the paddy crop and suspected samples are being tested," said Prof Kamboj. HAU scientists had reported a mysterious disease in the paddy crop for the first time during the year 2022, due to which the plants remained dwarf.

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	20-6-24	8	1-3

भारत में 1.17 करोड़ से अधिक पाठक (IRS 2019) PUNJAB KESARI HISSAR

पंजाब केसरी

चावल की नर्सरी में स्पाइनारियोविरिडे समूह का वायरस

धान की फसल में बौनेपन की समस्या से निपटने के लिए किसान उठाएं कारगर कदम : प्रो. काम्बोज

हिसार, 19 जून (ब्यूरो): वर्तमान में चावल की नर्सरी में स्पाइनारियोविरिडे समूह के वायरस हरियाणा में कई स्थानों पर देखे गए हैं। इस वायरस से प्रभावित पौधे बौने एवं ज्यादा हरे दिखाई देते हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि अभी संक्रमण छोटे स्तर पर है इसलिए किसानों को सलाह दी जाती है कि वें समय पर संक्रमण की रोकथाम के लिए कारगर कदम उठाएं ताकि फसल को नुकसान से बचाया जा सके।

उन्होंने बताया कि प्रदेश के विभिन्न स्थानों से एकत्र किए गए नमूनों के प्रयोगशाला विश्लेषण से उक्त वायरस की उपस्थिति का पता चला है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की एक टीम धान की फसल की नियमित निगरानी कर रही है और संदिग्ध नमूनों का प्रयोगशाला में परीक्षण किया जा रहा है।

वैज्ञानिक डॉ. विनोद कुमार मलिक ने बताया कि अगेती नर्सरी बुआई पर सावधानीपूर्वक नजर रखनी चाहिए और प्रभावित चावल के पौधों को उखाड़कर नष्ट कर देना चाहिए या खेतों से दूर मिट्टी में दबा देना चाहिए।

बौनेपन से ग्रस्त धान की फसल।

असमान विकास पैटर्न दिखाने वाली नर्सरी का पौध रोपण के लिए उपयोग करने से बचें। हॉपर्स से नर्सरी की सुरक्षा की सबसे अधिक आवश्यकता है। इसके लिए कीटनाशकों डिनोटफ्यूरान 20: एसजी 80 ग्राम या पाइमेट्रोजिन 50: डब्ल्यूजी 120 ग्राम प्रति एकड़ (10 ग्राम या 15 ग्राम प्रति कनाल नर्सरी क्षेत्र) का प्रयोग करें। सीधी बुआई वाले चावल की खेती को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

उल्लेखनीय है कि हकृवि के वैज्ञानिकों ने वर्ष 2022 के दौरान धान की फसल में पहली बार एक रहस्यमय बीमारी की सूचना दी थी, जिस कारण हरियाणा राज्य में धान उगाने वाले क्षेत्रों में पौधे बौने रह गए थे जिससे सभी प्रकार की चावल किस्में प्रभावित हुई थीं। प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों का दौरा करके डॉ. शिखा यशवीर, डॉ. दलीप, डॉ. महावीर सिंह, डॉ. सुमित सैनी, डॉ. विशाल गांधी और डॉ. मंजुनाथ की टीम ने बौनेपन की समस्या से ग्रस्त पौधों के सैम्पल एकत्रित किए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	20-6-24		

दैनिक भास्कर

धान की नर्सरी में बौनेपन की समस्या, प्रभावित पौधों को उखाड़कर जल्द नष्ट कर दें किसान

फसल में स्पाइनारियोविरिडे समूह का वायरस दिखा, नियमित निगरानी जरूरी

भास्कर न्यूज | हिसार

धान की नर्सरी में स्पाइनारियोविरिडे समूह के वायरस देखा गया है। इस वायरस से प्रभावित पौधे बौने एवं ज्यादा हरे दिखाई देते हैं। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि अभी संक्रमण छोटे स्तर पर है। इसलिए किसान समय पर संक्रमण की रोकथाम के लिए कारगर कदम उठाएं। प्रदेश के विभिन्न स्थानों से एकत्र किए गए नमूनों के प्रयोगशाला विश्लेषण से इस वायरस का पता चला है। वैज्ञानिकों की टीम धान की फसल की नियमित निगरानी कर रही है और संदिग्ध नमूनों का प्रयोगशाला में परीक्षण किया जा रहा है। वैज्ञानिक डॉ. विनोद कुमार

बौनेपन से ग्रस्त धान की फसल।

मलिक ने बताया कि प्रभावित धान के पौधों को उखाड़कर नष्ट कर देना चाहिए या खेतों से दूर मिट्टी में दबा दें। असमान विकास पैटर्न दिखाने वाली नर्सरी का पौधरोपण करने से बचें। हॉपर्स से नर्सरी की सुरक्षा की सबसे अधिक आवश्यकता है। इसके लिए डिनोटफ्यूरान 20: एसजी 80 ग्राम या पाइमेट्रोजिन 50: डब्ल्यूजी 120 ग्राम प्रति एकड़। 10 ग्राम या 15 ग्राम प्रति कनाल नर्सरी में कीटनाशकों का प्रयोग करें।

2022 में आई थी ऐसी समस्या

हकृवि के वैज्ञानिकों ने वर्ष 2022 के दौरान धान की फसल में पहली बार एक रहस्यमय बीमारी की सूचना दी थी, जिसके कारण हरियाणा राज्य में धान उगाने वाले क्षेत्रों में पौधे बौने रह गए थे। जिससे सभी प्रकार की चावल किस्में प्रभावित हुई थी। प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों का दौरा करके डॉ. शिखा यशवीर, डॉ. दलीप, डॉ. महावीर सिंह, डॉ. सुमित सैनी, डॉ. विशाल गांधी और डॉ. मंजुनाथ की टीम ने बौनेपन की समस्या से ग्रस्त पौधों के सैंपल एकत्रित किए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	20.6.24	3	5-8

खेतीबाड़ी

एचएयू के वैज्ञानिक बोले- प्रभावित पौधों को उखाड़कर नष्ट कर देना चाहिए या खेतों से दूर मिट्टी में दबा देना चाहिए

धान की नर्सरी में पौधे रह जाते हैं बौने, वायरस का प्रकोप

मई सिटी रिपोर्टर

हिसार। धान की नर्सरी में स्पाइनारियोविरिडे समूह के वायरस का प्रकोप दिखाई दिया है। इस वायरस से प्रभावित पौधे बौने एवं ज्यादा हरे दिखाई देते हैं। विभिन्न स्थानों से एकत्र किए गए नमूनों के प्रयोगशाला में विश्लेषण से इस वायरस की उपस्थिति का पता चला है। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की एक टीम धान की फसल की नियमित निगरानी कर रही है। संदिग्ध नमूनों का प्रयोगशाला में परीक्षण किया जा रहा है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि अभी संक्रमण छोटे स्तर पर है। इसलिए किसानों को सलाह दी जाती है कि वे समय पर संक्रमण की रोकथाम के लिए कारगर कदम उठाएं ताकि फसल को नुकसान से बचाया जा सके। उन्होंने बताया कि वैज्ञानिकों की टीम ने प्रदेश के कई जिलों से लिए गए नमूनों की प्रयोगशाला में विश्लेषणात्मक जांच की तो इस वायरस की पुष्टि हुई।

कृषि वैज्ञानिक डॉ. विनोद कुमार मलिक ने बताया कि अगेती नर्सरी बुआई पर सावधानीपूर्वक नजर रखनी चाहिए। प्रभावित चावल के पौधों को उखाड़कर नष्ट कर देना चाहिए या खेतों से दूर मिट्टी में दबा देना चाहिए। असमान विकास पैटर्न दिखाने वाली नर्सरी का पौधरोपण के लिए उपयोग करने से बचें। हॉपर्स से नर्सरी की सुरक्षा की सबसे अधिक आवश्यकता है। इसके लिए कीटनाशकों डिनोटफ्यूरान 20ः एसजी 80 ग्राम या पाइमेट्रोजिन 50ः डब्ल्यूजी 120 ग्राम प्रति एकड़। (10 ग्राम या 15 ग्राम प्रति कनाल नर्सरी क्षेत्र) का प्रयोग करें। सीधी बुआई वाले चावल की खेती को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

वैज्ञानिकों ने वर्ष 2022 के दौरान धान की फसल में पहली बार एक रहस्यमय बीमारी की सूचना दी थी, जिसके कारण हरियाणा राज्य में धान उगाने वाले क्षेत्रों में पौधे बौने रह गए थे। जिससे सभी प्रकार की चावल किस्में प्रभावित हुई थी। प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों का दौरा करके डॉ. शिखा यशवीर, डॉ. दलीप, डॉ. महावीर सिंह, डॉ. सुमित सैनी, डॉ. विशाल गांधी और डॉ. मंजूनाथ की टीम ने बौनेपन की समस्या से ग्रस्त पौधों के सैम्पल एकत्रित किए।

बौनेपन से ग्रस्त धान की फसल। स्रोत : संस्थान

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	20-6-24		

दैनिक भास्कर

उड़द व मूंग की खेती कर दोहरा लाभ लें, 130-140 दिन में पककर तैयार हो जाती है अरहर की फसल

अरहर की एच 77-216, यूपीएएस-120, पारस एच 82-1 बेहतर किस्में

यशपाल सिंह | हिसार

अरहर की फसल के साथ उड़द व मूंग की खेती भी की जा सकती है। अरहर की दो कतारों के बीच के हिस्से में मूंग एमएच 421, एमएच 1142 या उड़द यूएच-1 की कम समय में पकने वाली किस्म की एक-एक कतार उगाई जा सकती है। यदि ऐसा करना हो तो खुड़ों का फासला 50 सेंटीमीटर रखकर अरहर की बिजाई करें। बीज को राईजोबियम पीएसबी के टीके से उपचारित करके ही बोएं। राइजोबियम का टीका लगाने से पैदावार में वृद्धि की संभावना रहती है। इसके लिए बिजाई से पहले एक एकड़ के बीज में एक टीका राइजोबियम व एक टीका फास्फोबैक्टीरिया का लगाना चाहिए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि अरहर एवं मूंग या उड़द के राइजोबियम के टीके अलग-अलग होते हैं। इसलिए संबंधित फसल के टीके से ही बीज को उपचारित करें। जिन खेतों में गत वर्ष अंगमारी का प्रकोप रहा हो उनमें अरहर की खेती न करें।

अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके पाहुजा ने बताया कि अरहर की कम समय में पकने वाली मानक एच 77-216, यूपीएएस-120, पारस एच 82-1 अच्छी किस्में हैं, जो 130-140 दिन में पककर तैयार हो जाती हैं। इन सभी की बिजाई इस माह में पूरी कर लें। अंतरवर्ती अरहर और मूंग या उड़द की खेती के लिए तीन किलोग्राम अरहर और तीन किलोग्राम मूंग या उड़द का बीज डालें। अरहर की एकल खेती के लिए लगभग 5-6 किलोग्राम बीज डालें और कतारों में 40 सेंटीमीटर की दूरी रखें। बिजाई से पहले या बिजाई करते समय 18 किलोग्राम यूरिया और 100 किलोग्राम सिंगल सुपरफास्फेट एसएसपी या इनके अभाव में 35 किलोग्राम डाइअमोनियम फास्फेट डीएपी प्रति एकड़ के हिसाब से ड्रिल करें।

अरहर की फसल

मूंग की खेती

सोयाबीन की पीके 416, 564 और 472 किस्में बोएं

वैज्ञानिक डॉ. राजेश यादव ने बताया कि सोयाबीन की बिजाई जून के अंत से जुलाई के आरंभ तक करनी चाहिए। अच्छे जमाव के लिए बिजाई के समय जमीन में नमी पूरी मात्रा में होनी चाहिए। 30 किलोग्राम बीज प्रति एकड़, कतार से कतार का फासला 45 सेंटीमीटर रखकर 2.5 सेंटीमीटर गहरी बिजाई करें। पीके 416, 564 और 472 किस्में ही बोएं। 22 किलोग्राम यूरिया और 200 किलोग्राम एसएसपी प्रति एकड़ बिजाई के समय डालें। सोयाबीन के बीज का राइजोबियम पीएसबी के टीके से उपचार अवश्य करें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	19.06.2024	---	--

धान फसल में बौनेपन की समस्या से निपटने के लिए किसान उठाएं कारगर कदम

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। वर्तमान में चावल की नर्सरी में स्पाइनारियोविरिडे समूह के वायरस हरियाणा में कई स्थानों पर देखे गए हैं। इस वायरस से प्रभावित पौधे बौने एवं ज्यादा हरे दिखाई देते हैं। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि अभी संक्रमण छोटे स्तर पर है। किसानों को सलाह दी जाती है कि वे समय पर संक्रमण की रोकथाम के लिए कारगर कदम उठाएं ताकि फसल को नुकसान से बचाया जा सके।

वैज्ञानिक डॉ. विनोद कुमार मलिक ने बताया कि अगेती नर्सरी बुआई पर नजर रखनी चाहिए और प्रभावित चावल के पौधों को उखाड़कर नष्ट कर देना चाहिए या खेतों से दूर मिट्टी में दबा देना चाहिए। असमान विकास पैटर्न दिखाने वाली नर्सरी का पौध रोपण के लिए उपयोग करने से बचें।

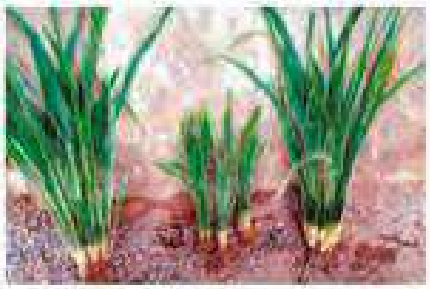

बौनेपन से ग्रस्त धान की फसल।

उल्लेखनीय है कि हकृवि के वैज्ञानिकों ने वर्ष 2022 के दौरान धान की फसल में पहली बार एक रहस्यमय बीमारी की सूचना दी थी, जिसके कारण हरियाणा राज्य में धान उगाने वाले क्षेत्रों में पौधे बौने रह गए थे। जिससे सभी प्रकार की चावल किस्में प्रभावित हुई थी। प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों का दौरा करके डॉ. शिखा यशवीर, डॉ. दलीप, डॉ. महावीर सिंह, डॉ. सुमित सैनी, डॉ. विशाल गांधी और डॉ. मंजुनाथ की टीम ने बौनेपन की समस्या से ग्रस्त पौधों के सैम्पल एकत्रित किए।

हिसार: धान फसल में बौनेपन की समस्या से निपटने को किसान उठाएं कारगर कदम

19 Jun 2024 18:02:52

हिसार, 19 जून (हि.स.)। वर्तमान में चावल की नर्सरी में स्पाइनारियोविरिडे समूह के वायरस हरियाणा में कई स्थानों पर देखे गए है। इस वायरस से प्रभावित पौधे बौने एवं ज्यादा हरे दिखाई देते हैं। बुधवार को हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज ने बुधवार को बताया कि अभी संक्रमण छोटे स्तर पर है। इसलिए किसानों को सलाह दी जाती है कि वे समय पर संक्रमण की रोकथाम के लिए कारगर कदम उठाएं ताकि फसल को नुकसान से बचाया जा सके।

उन्होंने बताया कि प्रदेश के विभिन्न स्थानों से एकत्र किए गए नमूनों के प्रयोगशाला विश्लेषण से उक्त वायरस की उपस्थिति का पता चला है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की एक टीम धान की फसल की नियमित निगरानी कर रही है और संदिग्ध नमूनों का प्रयोगशाला में परीक्षण किया जा रहा है। वैज्ञानिक डॉ. विनोद कुमार मलिक ने बताया कि अगेती नर्सरी बुआई पर सावधानीपूर्वक नजर रखनी चाहिए और प्रभावित चावल के पौधों को उखाड़कर नष्ट कर देना चाहिए या खेतों से दूर मिट्टी में दबा देना चाहिए। असमान विकास पैटर्न दिखाने वाली नर्सरी का पौध रोपण के लिए उपयोग करने से बचें। हॉपर्स से नर्सरी की सुरक्षा की सबसे अधिक आवश्यकता है। इसके लिए कीटनाशकों डिनोटफ्यूरान 20: एसजी 80 ग्राम या पाइमेट्रोजिन 50: डब्ल्यूजी 120 ग्राम प्रति एकड़। (10 ग्राम या 15 ग्राम प्रति कनाल नर्सरी क्षेत्र) का प्रयोग करें। सीधी बुआई वाले चावल की खेती को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

उल्लेखनीय है कि हकृवि के वैज्ञानिकों ने वर्ष 2022 के दौरान धान की फसल में पहली बार एक रहस्यमय बीमारी की सूचना दी थी, जिसके कारण हरियाणा राज्य में धान उगाने वाले क्षेत्रों में पौधे बौने रह गए थे। इससे सभी प्रकार की चावल किस्में प्रभावित हुई थी। प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों का दौरा करके डॉ. शिखा यशवीर, डॉ. दलीप, डॉ. महावीर सिंह, डॉ. सुमित सैनी, डॉ. विशाल गाधी और डॉ. मंजूनाथ की टीम ने बौनेपन की समस्या से ग्रस्त पौधों के सेम्पल एकत्रित किए।